CHAPTER 12, काव्य-संध्या के बाद[गुमित्रानंदन पंत]

PAGE 148, अभ्यास

11:14:1: प्रश्न-अभ्यास:1

1. संध्या के समय प्रकृति में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं, कविता के आधार पर लिखिए।

जब शाम होती है तो सूर्य के धुप में एक लालिमा आ जाती हैं ।ये लालिमा जब पीपल के पत्तो पे पड़ती है तो उनका रंग तांबे की तरह प्रतीत होता हैं। और पत्ते पेड़ से गिरते हुए ऐसे दिखते हैं जैसे मानो झरना स्वर्णिम आभा के साथ विभिन्न प्रवाह में बह रहा हो। सूर्य इस गति से चलता है जैसे वह पृथ्वी के अन्दर समां रहा हो है। और देखते - देखते सूरज गायब हो जाता है। गंगा का पानी एक अन्धकारमय लालिमा लिए चितकबरा प्रतीत होने लगता है।

11:14:1: प्रश्न-अभ्यास:2

2. पंत जी ने नदी के तट का जो वर्णन किया है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

पन्त जी ने इस कविता में उस वृद्ध औरतों की बहुत सुन्दर उपमा दी हैं ।उन्होंने कहा हैं कि नदी के तट पर ध्यान में मगन वह वृद्ध औरतें ऐसे प्रतीत हो रही है जैसे किसी शिकार की चेष्ठा में बगुले खड़े हो । उन्होंने नदी की बहती धारा को वृद्ध औरतों के मन में बहने वाले दुःख के समान बताया हैं । उनकी कविता में वृद्ध औरतें और बगुले दोनों ही नदी के किनारे में मिलते हैं । उनके सफ़ेद रंग के कारण दोनों की छवि एक समान प्रतीत होती हैं ।

11:14:1: प्रश्न-अभ्यास:3

3. बस्ती के छोटे से गाँव के अवसाद को किन-किन उपकरणों द्वारा अभिव्यक्त किया गया है?

बस्ती में विद्यमान छोटे से गाँव के अवसाद को इनके माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है :-

(क) गाँव के घरों में डिबरी का प्रयोग होता है प्रकाश पाने के लिए ,यह प्रकाश कम देती है और धुआं ज्यादा ।

(ख) लोगों के मन का अवसाद उनकी आँखों में जालों के रूप में विद्यमान रहता है ।

(ग) उनके दिल का क्रंदन तथा मूक निराशा, दीये की लौ के साथ कांपती है ।

(घ) गाँव का बनिया ग्राहकों का इंतज़ार करते - करते ऊंघ जाता है ।

11:14:1: प्रश्न-अभ्यास:4

4. लाला के मन में उठनेवाली दुविधा को अपने शब्दों में लिखिए।

लाला सोचता है कि क्यों वह गरीबी, दुख और उत्पीड़न झेल रहा है? उसे खुशी क्यों नहीं मिलती?

वह अपने रिश्तेदारों को एक साफ सुथरा घर देने में सक्षम क्यों नहीं है? वह शहर में रहने वाले बनियों की तरह प्रगति क्यों नहीं कर पाता? किसके द्वारा उसकी पदोन्नति का साधन रोका गया है? वह सोचता है कि ऐसा कुछ तो है जो उसकी प्रगति में बाधा उत्पन्न कर रहा है ।उसका समय और उसका भाग्य उसे प्रगति करने का अवसर क्यों नहीं देते । लाला के मन में ये सारी दुविधाएं पैदा हो रही हैं।

11:14:1: प्रश्न-अभ्यास:5

5. सामाजिक समानता की छवि की कल्पना किस तरह अभिव्यक्त हुई है?

सामाजिक समानता की छवि की कल्पना इस प्रकार अभिव्यक्त हुई है :-

(क) कर्म तथा गुण के समान ही सकल आय-व्यय का वितरण होना चाहिए ।

(ख) सामूहिक जीवन का निर्माण किया जाए ।

(ग) समाज को धन का उत्तराधिकारी बनाया जाए ।

(घ) सभी व्याप्त वस्त्र ,भोजन तथा आवास के अधिकारी हों ।

(ङ) श्रम सबमें समान रूप से बंटे ।

11:14:1: प्रश्न-अभ्यास:6

6. 'कर्म और गुण के समान ..... हो वितरण' पंक्ति के माध्यम से कवि कैसे समाज की ओर संकेत कर रहा है?

इस पंक्ति में, कवि समाज में समानता के अधिकार की कल्पना कर रहा है जहाँ किसी भी प्रकार का वितरण मनुष्य के कार्यों और गुणों पर आधारित होना चाहिए। प्रत्येक मनुष्य को उसके काम करने की क्षमता के आधार पर काम दिया जाये जिसे वो भली भांति कर सके और खुद के

लिए अच्छी आमदनी कर सके। इससे समाज में गरीबी दूर होगी और समाज मजबूत बनेगा हैं। समाजवाद के मूल गुण वो होते है जिसमें किसी एक वर्ग को आय व्यय का अधिकार नहीं हो। समान अधिकार से सभी को रोजगार के अवसर प्राप्त कराया जाये ।

7. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(क) तट पर बगुलों-सी वृद्धाएँ
विधवाएँ जप ध्यान में मगन,
मंथर धारा में बहता
जिनका अदृश्य, गति अंतर-रोदन!

उत्तर

प्रस्तुत पंक्तियों में कवि ने बहुत ही सुंदर और मार्मिक रूप में प्रकृति का चित्रण किया है। कवि कहता है जिस तरह तट पर बगुले शिकार प्राप्त करने के उद्देश्य से मंथर धारा में खड़े रहते हैं, ऐसे ही गाँव की वृद्ध औरतें ध्यान करने हेतु नदी के किनारे पर खड़ी हैं। उनके हृदय में दुख की मंथन धारा बह रही है। इस काव्यांश की प्रत्येक पंक्ति में काव्य सौंदर्य अद्‌भुत जान पड़ता है। पहली पंक्ति में 'बगुलों-सी वृद्धाएँ' में उपमा अलंकार है। कवि ने तत्सम शब्दों का प्रयोग करके अपनी बात को बहुत सुंदर रूप में चित्रित किया है।

8. आशय स्पष्ट कीजिए-
(क) ताम्रपर्ण, पीपल से, शतमुख/झरते चंचल स्वर्णिम निर्झर!
(ख) दीप शिखा-सा ज्वलित कलश/नभ में उठकर करता नीराजन!
(ग) सोन खगों की पाँति/आर्द्र ध्वनि से नीरव नभ करती मुखरित!
(घ) मन से कढ़ अवसाद श्रांति/आँखों के आगे बुनती जाला!
(ङ) क्षीण ज्योति ने चुपके ज्यों/गोपन मन को दे दी हो भाषा!
(च) बिना आय की क्लांति बन रही/सके जीवन की परिभाषा!
(छ) व्यक्ति नहीं, जग की परिपाटी/दोषी जन के दुःख क्लेश की।

उत्तर
(क) पीपल के सूखे पत्ते ऐसे लग रहे हैं मानो ताँबे धातु से बने हों। वह पेड़ से गिरते हुए ऐसे लग रहे हैं मानो सैंकड़ों मुँह वाले झरनों से सुनहरे रंग की धाराएँ गिर रही हों।
(ख) मंदिर के शिखर पर लगा कलश सूर्य की रोशनी के प्रभाव से दीपक की जलती लौ के समान लग रहा है। ऐसा लग रहा है मानो संध्या आरती में वह भी लोगों के समान आरती कर रहा है।
(ग) आकाश में व्याप्त खग नामक पक्षी पंक्ति में उड़ रहे हैं। उनकी गुंजार शांत आकाश को गुंजार से भर देती है।
(घ) मनुष्य के मन में व्याप्त दुख तथा कष्ट उसकी आँखों में यादों के रूप में उभर आते हैं।
(ङ) घरों में विद्यमान दीपक जल उठे हैं। इस अंधकार में उसकी रोशनी अवश्य कमज़ोर है। उस कमज़ोर ज्योति ने लगता है गोपों के मन को एक आशा दे दी है।
(च) गाँव में लोगों के पास आय का साधन विद्यमान नहीं है। अतः उसके जीवन में बहुत दुख विद्यमान हैं। ऐसा लगता है कि मानो यह अभाव उसकी कहानी बनकर रह जाएँगे।
(छ) दोष से युक्त सामाजिक व्यवस्था ही मनुष्य के दुख का कारण है। धन के असमान बँटवारे के कारण ही समाज में अंतर व्याप्त है।